"Knowledge Scholar"
An International Peer Reviewed E-Journal Of Multidisciplinary Research
Volume: 08, Issue: 01, Jan. – Feb. 2021 eISSN NO. 2394-5362
Impact Factor (SJIF) – 5.266

लोकसाहित्य

प्रा. डॉ. रेखा मुळे
हिन्दी विभाग
वसंतदादा पाटील महाविद्यालय
पाटोदा बीड, महाराष्ट्र, भारत

लोक साहित्य का अभिप्राय उस साहित्य से है। जिसकी रचना लोक करता है। किसी देश अथवा क्षेत्र का लोकसाहित्य वहाँ की आदिकाल से लेकर अब तक की उन सभी प्रवृत्तीयों कार प्रतिक होता है। जो साधारण जनस्वभाव के अंतर्गत आती है। इस साहित्य में जन जीवन की सभी प्रकार की भावनाएँ बिना किसी कृत्रिमता के समाई रहीत है।

भारत में लोक साहित्य का उद्‌भव और विकास लोक साहित्य किसी भी समाज की भाषा और संस्कृति का एस हिस्सा है। समूला लोक साहित्य की आज बता रहा है कि ये समस्याएँ तो कुछ कम ही सही हमारे बीच बाजार स्वार्थ और अहंकार का लांडव चल रहा है। आज हमारे हम जन जन के सुख शांती की नाही केवल अपने सुखों की कामना से ही लबालब है।

संस्कृति एक जीवित प्रक्रिया है। जो लोक के स्तर पर अंकुरित होती है। पनपती और फैलती है। तथा पुरे लोक को संस्कारित करती है। एवं विशिष्ट स्तर पर अनेक लोकों के विविध पुब्पों व्दारा एक सुंदर माला निर्मित करती है। लोक साहित्य, जिसे लोक कथाओं या मौखिक परंपरा भी कहाँ जाता है। बिना लिखित भाषा वाली संस्कृतियों विआ है। यह गद्य और शब्द से संचरित होता है। जैसा कि गद्य और पद्य की कथाओं कविताओं और गीतों मिथको नाटको रीति रिवाजों कहावतों पहेलियाँ और इसी तरह के लिखित साहित्य इसमें समाहित होता है।

भारत एक सांस्कृतिक विविधता वाला देश है। प्रत्येक संस्कृति की अपनी ज्ञान प्रणाली है। स्वतंत्रता के बाद से लोक साहित्य के संग्रह संरक्षण विश्लेषण और अध्ययन से भारत की प्रमुख भाषाओं में बहुत अधिक ध्यान दिया है।

लोक साहित्य का उपयोग एक शक्तिशाली शैक्षिक उपकरण कें रुप में कर सकते है। मौखिक साहित्य सामग्री संस्कृति सामाजिक लोक रीति और लोक कलाओं का प्रदर्शन संस्कृति के दो विशिष्ट घटक है। अर्थात भौतिक और गैर भैतिक।

भारतीय संस्कृति अपने लंबे इतिहास और अपनी अलग स्थलाकृति के कारण विशिष्ट है। भारत के लोग और लोक कलाएँ बहुत ही जातीय और सरल है। और अभी तक रंगीन और जीवंत है। इनसे हमे भारत की समृध्द विरासत के बारें में जानकारी मिलती है। लोक शब्द में व्यापक विविधता और अर्थ है। इस तथ्य कें बावजूद कि लोक कला की परिभाषा नही है। लेकिन ये निश्चित है की लोक साहित्य और लोक कला विकसित समाज के ढाँचे

के भीतर मौजूद संगठनो को एक सूत्र में पिरौती है। लोकसाहित्य मानव समुदाय की विविधता और बहुलता को गहरी रागात्मकता के साथ प्रकट करता है।

लोकसाहित्य सदैव जनमानस की भाषा और उनकी संस्कृति को अभिव्यक्त करने का माध्यम् रहा है।

भारतीय लोक कथाओं के अध्ययन की, शैक्षणिक अवधि १९४७ में भारतीय स्वतंगता के बाद संस्थागत औपचारिक अध्ययन और शोध को के साथ शुरु हुआ। इसके लिए आवश्यक प्रोत्साहन राष्ट्रीयता की अवधि कें भारत में लोककथाओं के अध्ययन कों निश्चित करते है। इस समय के कुछ उल्लेखनीय लोकसाहित्य विव्दान हे गोस्वामी बद्रीनाथ दत्ता इत्यादि।

लोक साहित्य और संस्कृति के वैज्ञानिक दृष्टिकोन का समावेश करते हुए हम भारत साहित समूचे एशियाई इतिहास और जातिय स्मृतियों को लेखाजोखा तैयार इसी तरह नृतत्व शास्त्रीय इतिहास की निर्मिति में भी लोक संस्कृति का समावेश महत्वपूर्ण सिध्द होता है। लोकसाहित्य साहित लोक संस्कृति के विविध उपादानों के प्रकाश में विभिन्न प्रज्ञातियों के प्रारम्भिक से लेकर परवर्ती दौर तक की भाषा पुरातत्व और भैतिक जीवन के अनुसन्धान की दिशा अत्यंत रोचक निष्कर्षो तक पहुँचा सकती है। इनके माध्यम्से लोक की विकासशील प्रक्रिया का प्रमाणिक और जीवन्त वृतांत प्राप्त किया जा सकता है।

लोक साहित्य एक ऐसा विज्ञान है। जिसमें मौखिक और भौतिक दोनों ही सामग्रिया का अध्ययन किया जाता है। लोकसाहित्य में केवल कहानियाँ गीत मुहावरे ही नही होते है। बल्कि उसका उद्देश्य उन मौखिक प्राप्तियों का भी अध्ययन है जो अनुष्ठानिक कार्यो के अंतर्गत आते है। आदिवासी क्षेत्रों में लोकगीतों मे अधिकत्तर राग, रागनियाँ होती है। और नही उनकी शब्द संयोजन अधिक लम्बा होती है। कथा और विवरण दोनों ही सन्दर्भ में वे शामिल होते है। किन्तु लोकगीतों में वे आदिवासी सीमाओं का अतिक्रमण कर वे परिष्कृत हो जाते है।

हिन्दी में अधिकतर ऋतु वर्णन का प्रारंभ बसंत तथा चैतोत्सव से हुआ है। पंरतु महाकवि कालिदास ने ऋतु वर्णन का प्रारंभ मानसून के पूर्व अथति ग्रीष्मकाल के बाद आकाश में उमडे घुमडे आषाढ को प्रथम बादल सें किया है। लोकसाहित्य किसी भाषा और संस्कृति का जीवंत साहित्य होता है। मिथिलॉचल बज्जिकांचल में एक लघु लोक नाटिका होती है। लोकगीतों में कल्पना भी अपनी सीमा तोड देती है। लोकगीतों में साज सज्जा बुनावट व्याकरण का कसाव छंद, अलंकार, प्रयोग नही होता है। पंरतु लोकगीत एक अलहड नव यौवना की तरअ पना सौदर्य छलकाते है।

वास्तव में लोक गीतो का ऱ्हदय् से जन्म हुआ है। और ये लोक गीत जनजन के ह्यदय में रचने बसने को लालायित है। यही इन की विशिष्टता है।

इस तरह लोक साहित्य भी मानसून से प्रभावित होकर सांस्कृतिक धरोहर के रुप में वाचिक परंपरा के माध्यम् से विकसित होता है। इसमें स्वाभाविक, लय, सैदर्य और माधुर्य मिश्रित है। लोक साहित्य व्याकरण और शिष्टता के बंधन को भले ही तोडदे सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम् बना रहना ही इसकी विशिष्टता है।

लोक साहित्य का अभिप्राय उस साहित्य से है। जिस की रचना लोक करता है। डॉ. सत्येन्द्र के अनुसार लोक मनुष्य समाज का वह वर्ग है। जो अभिजात्य संस्कार शास्त्रीयता और पंडित्य की चेतना अथवा अहकार से शुन्य है। और जो एक परंपरा की प्रवाह में जीवित रहता है। लोकगीतों में तो मानवीय मुल्यों का समावेश अपनी संपूर्णता में होता है। लोकगीतों में मानवी संबंधो की गरिमा का साधारण और पर्यायवरण की सुरक्षा का प्रश्न दोंनों एकारक होकर उपस्थित होते है।

लोक गीतो को निम्न लिखित प्रकार सें वर्गीकृत किया गया है। १. संस्कार व्रत गीत २. श्रमगीत ३. रितु गीत ४. जाति गीत.

लोक कथाओं को निम्नलिखित भागों में बहा गया है। १. परीकथा २. ब्रतकथा ३. प्रेमकथा ४. दंत कथा ५. पौरानिक कथा ६. नाग कथा ७. बोध कथा

लोक नाटक के प्रमुख प्रकार है। १. रामलीला २. स्वांग ३. यक्षगान ४. भवाई ५. तमाशा ६. नौटंकी ७. जागा ८. कथकली ९. माज १०. ख्याल

लोक जीवन की जैसी सरलतम नैसर्गिक अनुभूतिमयी अभिव्यंजना का चित्रण लोक गीतो व लोक कथाओं में मिलता है। वैसा अन्यत्र सर्वथा दुर्लभ है। लोक साहित्य में लोक मानव का ऱ्हदय् बोलता है। प्रकृति स्वयं गाती गुन गुनाती है। लोक साहित्य में निहित सौदर्य का मूल्योकन सर्वथा अनुभूति जन्य है।

निष्कर्ष-

लोक साहित्य किसी भी समाज वर्ग या समूह के सामूहिक जीवन का दर्पण होता है। किसी व्यक्ति विशेष का चिंतन मानव विवेचन विश्लेषण नही होता बल्की सामूहिक चेतना अनुभवों संवेदनाओं की अभिव्यकित रहती है। किसी भी समाज के इतिहास और संस्कृति को भली भांति समझने के लिए लोक साहित्य का अध्ययन आवश्यक है। भारतीय लोक सहित्य जनता के व्यापक जन समुह की सभी मौलिक सर्जनाओं का परिणाम है। यह केवल

लोक काव्य या गीतों तक हीन सीमित न होकर जनता के जीवन धर्म, संस्कृति तथा परम्पराओं से भी जुडा हुआ है।

संदर्भ सूचि-

१. समकालीन भारतीय साहित्य २००८.
२. संचारिका डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर विश्व विद्यालय, औरंगाबाद.
३. लोकयज्ञ त्रैमासिक डॉ. राजेंद्र सोनवणे
४. अवभैय- त्रैमासिक डॉ रतन पांडे विश्व विद्यालय मुंबई.